01. भारत पर मुस्लिम आक्रमण (Muslim invasion of India)

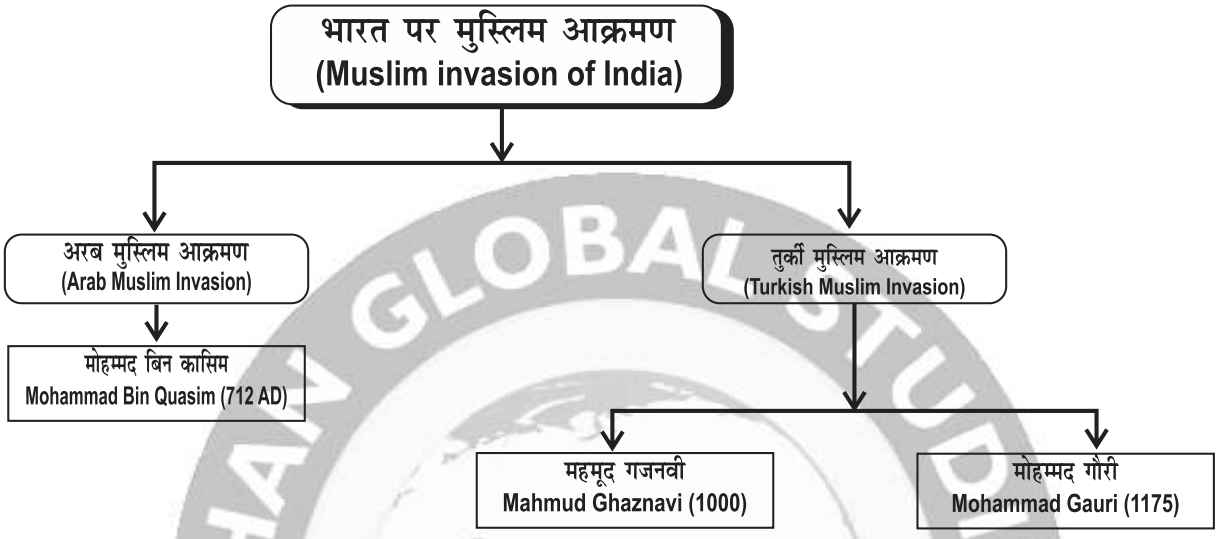

भारत पर अरब मुस्लिम आक्रमण

- भारत पर पहला सफल आक्रमण करने वाला अरब का मुस्लिम शासक **मोहम्मद-बिन-कासिम** था।
- इसने 712 ई. में रावड़ के युद्ध में सिंध के राजा दाहिर को पराजित कर दिया। राजा दाहिर 'चच' का वंशज था। उस समय सिंध की राजधानी ब्राह्मणवाद/आरोह थी।
- अरबों की सिंध विजय का प्रमाण फारसी ग्रंथ 'चचनामा (फतहनामा)' नामक ग्रंथ में मिलता है। जिसकी रचना 'अली अहमद' ने किया। इस पुस्तक की अरबी भाषा में रचना अबु मुआसिर ने किया।
- इसका भारत पर आक्रमण करने का उद्देश्य धन-दौलत लूटना और इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था न कि राज्य विस्तार का।
- मोहम्मद-बिन-कासिम ने 713 ई. में मुल्तान को जीत लिया और यहाँ से उसे इतना अधिक सोने का भंडार मिला कि मुल्तान को इतिहास में 'स्वर्ण नगरी' कहा जाने लगा।
- इसने जीते हुए क्षेत्र की राजधानी ''अलमन्सूरा'' को बनाया।
- मोहम्मद-बिन-कासिम के आक्रमण के फलस्वरूप अरबी संस्कृति को भारतीयों ने और कुछ भारतीय संस्कृति को अरबवासियों ने अपनाया।
- अरब और हिन्दु संस्कृति के मिश्रण के परिणामस्वरूप अरबवासियों ने भारत से खगोलशास्त्र, अंकगणित, चिकित्साशास्त्र और दर्शन के क्षेत्र में बहुत कुछ सिखा और इसका प्रचार-प्रसार पूरे यूरोप में किया।
- सर्वप्रथम अरबवासियों (मुस्लिमों) ने भारतीयों को हिन्दू कहकर संबोधित किया था और इस देश का नाम हिन्दुस्तान कहा था। अरब आक्रमण के फलस्वरूप भारत में पर्दा-प्रथा का तीव्र गति से विकास हुआ। इसके साथ ही जजिया, जकात और खराज (भू-राजस्व) नामक कर के बारे में जानकारी प्राप्त हुआ।
- **मोहम्मद-बिन-कासिम** ने भारत में सर्वप्रथम जजिया कर लगाया।
- जजिया गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का सुरक्षात्मक कर था।
  - **मुहम्मद बिन कासिम ने जजिया कर से 5 लोगों को मुक्त रखा–**
    - (i) बच्चा
    - (ii) बूढ़ा
    - (iii) ब्राह्मण
    - (iv) विकलांग
    - (v) औरत
- **फिरोज-शाह-तुगलक** ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
- मुगल बादशाह अकबर ने **1564 ई.** में जजिया कर समाप्त कर दिया।
- **औरंगजेब** ने 1679 ई. में पुन: जजिया कर लगा दिया।
  नोट:- एकमात्र मुगलबादशाह औरंगजेब थे जिसने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूला।

- जजिया कर को अंतिम रूप से **मोहम्मद शाह (रंगीला बादशाह)** ने समाप्त किया।
- अरबों ने सिंध में ऊंट पालने की प्रथा तथा खजूर की खेती को प्रारंभ किया।
- चचनामा ग्रंथ के अनुसार सुलेमान के आदेश पर मुहम्मद बिन कासिम की हत्या करवा दी गई थी।

भारत पर तुर्क आक्रमण

- भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का श्रेय तुर्कों को दिया जाता है।
- तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिम सीमाओं पर निवास करने वाले एक लड़ाकू एवं बर्बर जाति था। जो उमैय्या वंशी शासकों के संपर्क में आने के बाद ईस्लाम धर्म अपना लिया। उनका उद्देश्य एक विशाल मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना था।
- अलप्तगीन ने 932 ई. में अफगान प्रदेश में गजनी साम्राज्य की स्थापना किया। जिसकी राजधानी गजनी थी।
- गजनी वंश का अन्य नाम यामिनी वंश भी है।
- भारत पर पहला तुर्क आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था।
- प्रथम तुर्क आक्रमण के समय पंजाब में शाही वंश का शासक जयपाल शासन कर रहा था।
- सुबुक्तगीन अलप्तगीन का गुलाम था। जो बाद में अलप्तगीन का दामाद बना।
- इसने 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पेशावर में पराजित कर दिया।

महमूद गजनवी

- सुबुक्तगीन का पुत्र महमूद गजनवी था, जो अफगान के गजनी का रहने वाला था। महमूद गजनवी 998 ई. में गद्दी पर बैठा।
- अपने पिता के काल में महमूद गजनवी खुरासान का शासक था।
- सर हेनरी इलियट के अनुसार इसने 1000 ई. से 1027 ई. के बीच कुल 17 बार भारत पर आक्रमण किया।
- इसने मध्य एशिया में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना के लिए धन प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया।
- इसने 1001 ई. में पंजाब के हिन्दूशाही वंश के ऊपर आक्रमण किया। उस समय इसकी राजधानी वैहिंद अथवा उदभाण्डपुर थी। इस समय यहाँ के शासक जयपाल थे।
- जयपाल एकमात्र शासक है जो पराजित होने पर आत्महत्या कर लिया।
- महमूद गजनवी को बूत शिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता था।
- भारत में महमूद गजनवी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभियान 1025 से 1026 में सोमनाथ मंदिर (गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत) पर आक्रमण था। यह एक शिव मंदिर था।
- उस समय वहाँ का शासक भीम प्रथम था। इस युद्ध में 50 हजार से अधिक लोग मारे गए थे। महमूद इस मंदिर को पूर्णत: नष्ट कर दिया तथा इसकी कुल संपत्ति को लेकर सिंध के रेगिस्तान से वापस लौट गया।
- 1027 ई. में इसने जाट के विरुद्ध अपना अंतिम आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर दिया। क्योंकि सोमनाथ को लूटकर वापस जाते समय महमूद को जाटों ने क्षति पहुँचायी थी।
- फारूखी, उत्बी, फिरदौसी और अलबरूनी जैसे विद्वान गजनवी के दरबार में रहते थे।
- उत्बी ने किताब-उल-यामिनी की रचना की थी।
- उत्बी ने महमूद गजनवी के आक्रमणों को जेहाद की संज्ञा दी है।
- फिरदौसी ने शाहनामा लिखा, जबकि अलबरूनी ने अरबी भाषा में किताबुल हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द) लिखा।

तुर्क आक्रमण का दूसरा चरण (महमूद गौरी)

- तुर्क एक जनजाति थी जो अफगानिस्तान के क्षेत्र की थी।
- इसके दूसरे चरण का नेतृत्व मोहम्मद गौरी ने किया।
- इसका पूरा नाम मोहम्मद गौरी या मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन शाम (शिहाबुद्दीन) था। इसे गौर वंश का मोहम्मद भी कहा जाता है।
- गौर वंश में जो प्रधान था उसका नाम शंसबनि था। मोहम्मद गौरी इसी वंश का शक्तिशाली शासक था।
- 1178 ई. में इसने पाटन (गुजरात) पर आक्रमण किया उस समय वहाँ चालुक्य वंशीय शासक भीम-II (मूलराज्य द्वितीय) का शासन था। जो गौरी को बूरी तरह परास्त किया।
- यह तुर्क आक्रमणकारियों की पहली पराजय थी अर्थात् मोहम्मद गौरी की भारत में पहली पराजय थी।
- इसने पंजाब के भटिंडा पर जब अधिकार किया तो पृथ्वीराज चौहान-III से विवाद हो गया।
- 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान-III ने गौरी को पराजित कर दिया। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान का सेनापति स्कन्द था।
- 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र के सहयोग से पृथ्वीराज चौहान-III को पराजित कर दिया और उनकी हत्या कर दी।
- 1194 ई. के चंदावर के युद्ध में (फिरोजाबाद) उसने कन्नौज के शासक जयचंद को पराजित कर दिया।
- मोहम्मद गौरी का गुलाम तथा कुतुबद्दीन ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी 1198 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बिहार शरीफ नामक शहर बसाया।
- बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी को माना जाता है। बख्तियार खिलजी ने लखनौती को अपनी राजधानी बनाई थी।
- मोहम्मद गौरी का कोई पुत्र नहीं था तथा जयचंद को पराजित करने के बाद गोरी द्वारा भारत में जीते गए प्रदेशों को कुतुबद्दीन ऐबक को सौंप कर वापस गजनी लौट गया।

➢ **मोहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलाम थे–**
(i) कुतुबुद्दीन ऐबक (ii) याल्दोज
(iii) कुबाचा।

Note :– भारत में कागज का उपयोग 12वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था।

02. दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

- 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक के कुल 320 वर्षों तक दिल्ली पर मुस्लिम सुल्तानों का शासन रहा।
- भारत पर शासन करने वाले पाँच वंश के सुल्तानों के शासनकाल को दिल्ली सल्तनत या सल्तनत-ए-हिन्द/ सल्तनत-ए-दिल्ली कहा जाता है।

➢ **ये पाँच वंश निम्न थे–**

1. गुलाम वंश (1206-1290)
2. खिलजी वंश (1290-1320)
3. तुगलक वंश (1320-1414)
4. सैयद वंश (1414-1451)
5. लोदी वंश (1451-1526)

- इनमें से चार वंश मूलत: तुर्क थे जबकि अंतिम वंश अफगान था।

Trick :–

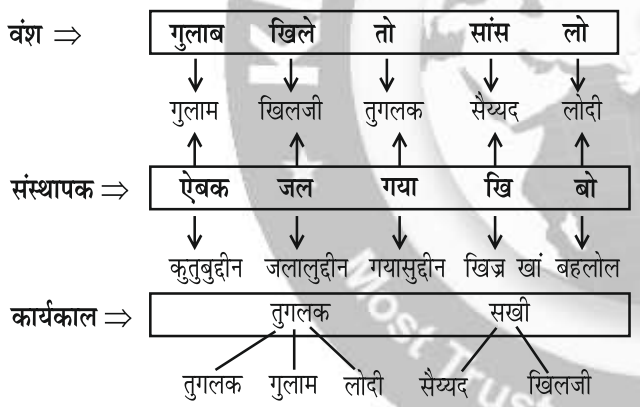

गुलाम वंश (1206 ई.-1290ई.)

- इस वंश को गुलाम वंश इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के गुलाम थे।
- इस वंश को इलबरी, ममलूक या दास कहा जाता है।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई.-1210 ई.)

- ऐबक मुहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलामों में से एक था।
- मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद ऐबक 1206 में स्वयं को लाहौर का स्वतंत्र शासक घोषित किया।
- ऐबक ने अपनी राजधानी की लाहौर को बनाया था।
- दिल्ली का प्रथम मुस्लिम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक था।
- ऐबक को दिल्ली का पहला तुर्क शासक माना जाता है।
- इन्होंने सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की, न ही अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और ना ही अपने नाम के सिक्के चलाये बल्कि इन्होंने केवल मलिक तथा सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- ये गरीबों के प्रति दया का भाव रखते थे अत: इन्हें हातिम कहा गया।
- ये लाखों में दान देते थे। अपनी असीम उदारता के कारण इन्हें लाख बख्श भी कहते हैं।
- इन्हें पूरा कुरान याद था इसलिए इन्हें कुरान खान भी कहा जाता है।
- इनके दरबार में मिनहाज-उस-सिराज रहते थे, जिन्होंने तबकात-ए-नासरी पुस्तक लिखी है।
- इनके दरबार मे हसन निजामी भी थे, जिन्होंने ताज-ऊल-नासिर पुस्तक लिखी है।
- ऐबक ने अजमेर विजय के बाद वहाँ पर ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवायी।
- ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद बनवायी।
- इण्डो ईस्लामिक कला का सबसे पहला उदाहरण कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में मिलता है।
- ऐबक के गुरु बख्तियार काकी थे।
- कुतुबमीनार बख्तियार काकी के याद में ऐबक द्वारा बनवाया गया था।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने से कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु हो गई।
- ऐबक का सहायक सेनापति बख्तियार खिलजी था।
- ऐबक का मकबरा लाहौर में है।

शम्सी वंश (इल्तुतमिश 1211 ई.-1236 ई.)

- इसे गुलाम का गुलाम कहते हैं, क्योंकि यह ऐबक का गुलाम था।
- 1215 के तराईन के तृतीय युद्ध में इसने याल्दोज को पराजित कर दिया।
- इसने सुल्तान की उपाधि धारण की तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया।
- इसने अपनी राजधानी लाहौर से दिल्ली को बनाया।
- इसने शासक बनने के लिए 1229 ई. में खलिफा अल मुनतसीर बिल्लाह से खिल्लत (Degree) हासिल की।
- इल्तुतमिश को गुंबद तथा मकबरा निर्माण का जनक कहते हैं।
- इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नसिरूद्दीन महमूद का मकबरा सुल्तान गढ़ी में बनवाया।
- इल्तुतमिश ने भारत में इक्ता व्यवस्था का प्रारंभ की। इक्ता एक अरबी शब्द है।

- इक्ता व्यवस्था में कर्मचारियों को वेतन के बदले भूमि दिया जाता था।
- इसने 40 तुर्क सरदारों का एक सलाहाकर परिषद् बनाया जिसे तुर्कान-ए-चिहलगानी या चालीसा दल कहते हैं।
- इसके समय ख्वाजरिज्म के शासक जियाउद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खाँ दिल्ली की सीमा तक पहुँच गया। अत: इल्तुतमिश ने जियाउद्दीन को अपनी शरण नहीं दी।
- इल्तुतमिश को शुद्ध इस्लामिक पद्धति का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- यह शुद्ध अरबी सिक्का चलाने वाला प्रथम शासक था।
- इसने चाँदी का टंका तथा ताँबे का जीतल प्रारंभ किया।
- 1236 ई. को इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई। इसने अपने जीवन काल में ही रजिया सुलतान को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

रजिया सुल्तान (1236 ई.-1240 ई.)

- यह भारत की प्रथम महिला शासिका थी। यह पुरुषों की भांति वस्त्र कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर दरवार आने लगी जो 40 तुर्क सरदारों को पसंद नहीं था।
- दिल्ली के जलालुद्दीन याकूत (अश्वशाला का प्रधान) के साथ रजिया का घनिष्ठ संबंध थे। इसे अमीर-ए-आखुर नियुक्त किया।
- तवरहिन्द (भटिंडा- पंजाब) के इक्तादार मलिक अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जिस कारण रजिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु युद्ध में खुद को हारता देख रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया। किन्तु रास्ते में लौटते समय डाकुओं के हमले में हरियाणा के कैथल में रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या हो गई।
- दिल्ली में 40 सरदारों ने याकूत की हत्या कर दी।
- रजिया एक असफल शासिका साबित हुई और इसका प्रमुख कारण इसका महिला होना था।
- इतिहासकारों (एलफिस्टन) का कहना है कि अगर रजिया महिला न होती तो इसका नाम भारत के महान् शासकों में लिया जाता।
- इतिहासकार (मिनहाज) कहना है कि "भाग्य ने उसे पुरूष नहीं बनाया वरना उसके समस्त गुण उसके लिए लाभप्रद हो सकते थे। रजिया में वे प्रशंसनीय गुण थे जो एक सुल्तान में होना चाहिए।"

बलबन (1266 ई.-1286 ई.)

- बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था, वह इलबरी जाति का तुर्क था।
- उलुग खां की उपाधी बलबल को सुल्तान नासिरूद्दीन शाह ने दिया था।
- यह इरान का रहने वाला था।
- इसका पूरा नाम गयासुद्दीन बलबन था।
- दिल्ली के सुल्तान का पद संभालने से पहले बलबन नासिरूद्दीन सुल्तान का प्रधानमंत्री था।
- इसने सिजदा (घुटने पर बैठकर शीश नवाना) तथा पैबोस (पांव को चूमना) जैसी इरानी पद्धति को भारत में लागू किया।
- इसने नौरोज त्यौहार (फारसी) भी प्रारंभ किया।
- इसने राजा के राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- बलबन के राजत्व सिद्धांत का स्वरूप इरान के फारसी तत्वों से लिया गया है, इसके अंतर्गत बलबन सुल्तान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि मानता था।
- बलबन कहता था कि सुल्तान नियाबत-ए-खुदाई एवं जिल्ल-ए-इलाही है।
- इसने कहा कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि या छाया होता है।
- इसने 'लौह एवं रक्त' की नीति अपनाई अर्थात् आक्रमण नीति को अपनाया।
- बलबन ने चालीसा दल को समाप्त कर दिया।
- बलबन ने नायब के पद को भी समाप्त कर दिया, और वजीर के अधिकार को भी सीमित कर दिया।
- बलवन ने U.P. में एक गढ़-मुक्तेश्वर मस्जिद बनवायी।
- प्रथम बार ईमारतों में मौजूद शाही मेहराब बलबन के मकबरा में देखा गया था।
- बलबन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने दरबार में गैर-ईस्लामिक प्रथाओं का प्रचलन किया। इसी के समय सेना को वंशानुगत बना दिया था।
- इसने दीवान-ए-अर्ज नामक सैन्य विभाग की स्थापना किया।
- फारसी कवि अमिर खुसरो और अमिर हसन बलबन के दरबार में रहते थे।
- 1286 ई. में फिरोजशाह ने इसकी हत्या कर दी, जिसे जलालुद्दीन खिलजी भी कहते हैं।

खिलजी वंश (1290 ई.-1320 ई.)

जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी (1290 ई.-1296 ई.)

- खिलजी वंश के संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी थे।
- इनकी राजधानी किलोखरी थी।
- इन्होंने जनता के इच्छाओं के अनुरूप ही शासन किया। ये एक उदारवादी शासक थे।
- इन्होंने दक्षिण भारत विजय के लिए अपने भतीजा (दामाद) अलाउद्दीन खिलजी को भेजा।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत को जीतकर वहाँ से अत्यधिक धन लूटा।
- जलालुद्दीन ने जब इससे धन का हिसाब मांगा तो इसने उसकी हत्या (1296 ई. में) कड़ा मनीकपुर (इलाहाबाद) में कर दी।

अलाउद्दीन खिलजी (1296ई.-1316ई.)

- इसके बचपन का नाम अली गुर्शास्प था।
- इनका राज्याभिषेक बलबन के लाल महल में हुआ था।
- इसने सिकंदर की भांति विश्व विजय का अभियान चलाया। अत: इसे द्वितीय सिकंदर या सिकंदर-ए-सानी कहते हैं।
- इसने खलीफा के पद को मान्यता दिया।
- यह एक नया धर्म चलाना चाहता था। किन्तु उलेमा अनाउल्लमुल्क (विद्वान मौलाना) के कहने पर इसने यह निर्णय बदल दिया।
- इसने कुतुबमीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई-मीनार बनवाना प्रारंभ किया परन्तु यह बहुत छोटा बन पाया।
- इसने कुब्बत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई दरबार नामक दरवाजा बनवाया।
- इसने मूल्य नियंत्रण के लिए बाजार प्रणाली को लाया और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों की पहचान के लिए घोड़ा दागने की परंपरा एवं हुलिया लिखने की प्रथा लागू की।

अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान

- अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर-भारत तथा दक्षिण-भारत दोनों का अभियान किया।
- इसके समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। इस आक्रमण के कारण इसकी उत्तरी सीमा असुरक्षित हो गई।
- अलाउद्दीन, खिलजी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग पर ध्यान दिया और इस उद्देश्य से 1297 ई. में गुजरात के शासक राय कर्ण को पराजित कर दिया। इस आक्रमण का नेतृत्व नुसरत खां कर रहे थे। इसी दौरान 1000 दीनार में मलिक काफूर (चंदराम) नामक हिजड़ा को खरीदा गया।
- मलिक काफूर को हजार दीनारी भी कहते हैं।
- चित्तौड़ अभियान अलाउद्दीन ने रानी पद्मावती के लिए किया और यहाँ के राजा रतन सिंह को पराजित कर दिया, किन्तु चित्तौड़ की महिलाओं ने जौहर कर लिया।
- राजपूत महिलाएँ विदेशी आक्रमण से स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जलती आग में कूद जाती थी, जिसे जौहर कहते हैं।
- अलाउद्दीन ने दक्षिण-भारत विजय की जिम्मेदारी मलिक काफूर को दिया।
- 1309 ई. में इसने वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित कर दिय। प्रताप रूद्र देव ने अपने सोने की मूर्ति बनाई और उसमें जंजीर पहनाकर अलाउद्दीन को भेजा और साथ ही कोहिनूर हीरा भी भेजा एवं अधीनता स्वीकार कर ली।
- 1310 ई. में मलिक काफूर ने होयसल वंश पर आक्रमण किया किन्तु उसकी राजधानी द्वारसमुद्र को नहीं जीत सका।
- अलाउद्दीन जब निजामुद्दीन औलिया से भूमि का हिसाब मांगा तो उसने कहा कि 'मेरे घर में 10 दरवाजे हैं'।

➢ **अलाउद्दीन के 4 प्रमुख सेनापति–**

1. जफर खां
2. नुसरत खां
3. उलुग खां
4. मलिक काफूर

- यह अपने चारों सेनापति की तुलना पैगम्बर के खलीफा से करता था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमण को रोकने के लिए उलुग खाँ, जफर खाँ तथा नुसरत खाँ सेनापतियों की सहायता ली।
- मंगोलों से लड़ते समय जफर खां की मृत्यु 1299 ई. हो गई थी।
- अलाउद्दीन की समय में अंतिम मंगोल आक्रमण 1307 ई. में हुआ।
- इसी के शासन काल में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुआ।
- इसके समय दिल्ली में हाजियों द्वारा विद्रोह किया गया था।
- अमीर खुसरो के प्रसिद्ध पुस्तक खजायनुल-फुतूह में इसे द्वितीय सिकंदर कहा गया।
- यह बिना खलीफा के स्वीकृति से गद्दी पर बैठने वाला प्रथम शासक था।
- 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई। उसे दिल्ली की जामा मस्जिद के बाहर मकबरे में दफनाया गया।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316 ई.-1320 ई.)

- इसने खलीफा के पद को मान्यता नहीं दी।
- बरनी के अनुसार यह दरबार में कभी-कभी महिलाओं के वस्त्र पहन कर आ जाता था एवं कभी-कभी निर्वस्त्र आ जाता था।
- खिलजी वंश का सेनापति या मुख्यमंत्री खुसरो खां ने इसकी हत्या 1320 ई. में कर दी और खुद शासक बन गया।
- इस प्रकार खिलजी वंश का अंत हो गया।
- खिलजी वंश का कार्यकाल सबसे छोटा था।

तुगलक वंश (1320 ई.-1414 ई.)

- सल्तनत के इतिहास में तुगलक वंश के शासकों ने ही सबसे अधिक 1320 ई. से 1414 ई. तक अर्थात् 94 वर्षों तक शासन किया।

गयासुद्दीन तुगलक (1320 ई.-1325 ई.)

- गाजी मल्लिक ने तुगलक वंश की स्थापना की और गयासुद्दीन तुलगक के नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया।
- यह किसानों के लिए नहर निर्माण का कार्य प्रारंभ किया। अत: इसे नहरों का जनक या पिता माना जाता है। हालांकि सर्वाधिक नहरों का जाल बिछाने का कार्य फिरोजशाह तुगलक ने किया था।
- गयासुद्दीन तुगलक ने अपना पहला अभियान जौना खान के नेतृत्व में तेलंगाना के लिए किया।

- जौना खान ने तेलंगाना जीतकर उसका नाम सुल्तानपुर रख दिया।
- इस विजय के बाद जौना खान को **मुहम्मद बिन तुगलक** कहा गया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने खुद के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया, किन्तु बंगाल से इसे धन की प्राप्ति नहीं हुई।
- इसने निजामुद्दीन औलिया को संदेश भिजवाया कि मेरे दिल्ली पहुंचने तक दान में दी गई भूमि का हिसाब तैयार रखे।
- इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि 'हुनूज दिल्ली दूर अस्त' अर्थात् हुजूर दिल्ली अभी दूर है और वास्तव में हुआ भी वही गयासुद्दीन के दिल्ली आने से पूर्व ही उसका देहांत हो गया।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** ने उत्तरप्रदेश के अफगानपुर में गयासुद्दीन तुगलक के विश्राम के लिए लकड़ी का महल बनवाया किंतु इस महल के गिरने से गयासुद्दीन तुगलक की 1325 ई. में मृत्यु हो गई।
- यह गाजी का उपाधि धारण करने वाला प्रथम सुल्तान था।
- गयासुद्दीन तुगलक पर 29 बार मंगोल का आक्रमण हुआ था।
- सुलतान गयासुद्दीन का अंतिम सैन्य अभियान बंगाल का था। इस अभियान के वापसी के दौरान कर्नाट वंश के अंतिम शासक हरि सिंह देव को हराया था।
- इसके काल में डाक विभाग सर्वोच्च थी।
- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर रोमन शैली में तुगलकाबाद नामक नगर स्थापित किया।

मुहम्मद बिन तुगलक

- इसका वास्तविक (मूल) नाम जौना खां या उलुग खां था।
- मध्यकालीन सभी सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति था।
- यह 23 भाषाओं का अच्छा जानकार था, साथ ही ज्योतिष, खगोल तथा गणित का भी अच्छा विद्वान था।
- मुहम्मद बिन तुलगक को अपनी सनक भरी योजनाओं, क्रूर कृत्यों एवं दूसरे के सुख-दुख के प्रति उपेक्षा भाव रखने के कारण स्वप्नशील, पागल एवं रक्तपिपासु कहा गया।
- यह इतिहास में सबसे पढ़ा-लिखा शासक था।
- इसके समय सल्तनत काल की विकास बहुत तेजी से हुआ, साथ ही बिखराव भी तेजी से हुआ।
- इसके समय साम्राज्य को 29 प्रातों में बांटा गया था।

➢ **मुहम्मद बिन तुगलक ने 5 सबसे बड़ी गलतियाँ–**

1. इसने दोआब पर तब कर बढ़ा दिया जब वहाँ अकाल पड़ा था। दोआब सल्तनत काल का सबसे उपजाऊ प्रदेश था। किसानों के विद्रोह के कारण इसने किसानों की मदद के लिए एक नये विभाग दीवान-ए-अमीरकोही की स्थापना की जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही था।
- अकाल से राहत के लिए सुल्तान ने एक अकाल संहिता तैयार करवाई।
- किसानों के लिए अग्रिम कृषि ऋण (तकावी) की व्यवस्था करवाई।

2. इसने ताँबे की सांकेतिक मुद्रा 1329-30 ई. में चलवाया, किन्तु इस मुद्रा का बड़े पैमाने पर दुरूपयोग होने लगा।
- बरनी कहते हैं कि प्रत्येक हिन्दू का घर टकसाल बन गया था।

3. इसने मंगोल आक्रमण के डर से तथा दक्षिण में इस्लाम के प्रसार के लिए राजधानी दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) को 1327 ई. में स्थानांतरित किया जो असफल रहा।
- बरनी के अनुसार देवगीरि साम्राज्य के केन्द्र में था जहाँ चारों ओर से दूरी समान थी इसलिए इसे राजधानी के लिए चुना गया था।

4. इसने खुरासान (इरान) पर आक्रमण के लिए 3 लाख सैनिकों की फौज बनायी और उन्हें अग्रिम वेतन भी दिया, किन्तु अंतिम समय में वह खुरासान के शासक से संधि कर लिया।
- इतिहासकारों के अनुसार खुरासान मध्य एशिया का ट्रांस ऑक्सीयाना का क्षेत्र था।
- यह अभियान तरमाशरीन और मुहम्मद तुगलक की मैत्री का परिणाम था।

5. इसने सैनिकों के विद्रोह से बचने के लिए इन्होंने हिमालय की दुर्गम्य चोटी कराचिल अभियान के लिए सैनिक भेजा जहाँ अधिकांश सैनिक आपसी विवाद में लड़कर मर गए।
- 1333 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री 'इब्नबतुता' 7000 किमी. की यात्रा के बाद दिल्ली पहुंचा।
- 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर विजय नगर की स्थापना कर ली।
- 1347 ई. में हसन गंगु ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर बहमनी साम्राज्य की स्थापना कर ली।
- 1351 ई. सिंध (थट्टा) विद्रोह को दवाने के लिए सुल्तान स्वयं गये थे जिस दौरान उसकी मृत्यु हो गयी थी।
- उसके मृत्यु पर बदायूँ कहता है कि ''सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।''
- **मुहम्मद बिन तुगलक** होली का त्योहार अपने दरबार में मनाता था।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** का कहना था कि मेरा राज्य रूग्ण (बीमार) हो चुका है।
- इसे रक्त पिपाशु या पागल बादशाह भी कहा जाता था।

Note :– मुहम्मद बिन तुगलक के समय बिहार के सुबेदार मज्दुल मुल्क था।

फिरोज-शाह-तुगलक

- यह जौना खाँ का चचेरा भाई था।
- फिरोज शाह तुगलक एक हिन्दु माता, राजपूत रणमल की पुत्री का पुत्र था। अत: इस पर हिन्दु होने का आरोप न लगे इसलिए इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।

- इसका राज्याभिषेक 1351 ई. में हुआ।
- इसने अशोक के टोपरा अभिलेख (हरियाणा) को तथा मेरठ अभिलेख (U.P.) को दिल्ली में स्थापित कर दिया।
- इसने अलग से एक निर्माण विभाग बनवाया और 300 से अधिक नगर (शहर) का निर्माण कराया। जैसे– जौनपुर, फिरोजाबाद, हिसार, फतेहाबाद, फिरोजपुर आदि।
- जौनपुर को सिराज-ए-हिन्द के रूप में जाना जाता है।
- इसने 1200 से अधिक फलों के बाग-बगीचे लगवाएं ताकि फलों की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।
- इसने नहरों का जाल बिछा दिया।
- इसी के समय सर्वप्रथम सिंचाई कर (Tax) लेना प्रारंभ कर दिया गया था। जो किसान सरकारी नहर से खेती करता था उसे 'हक-ए-शर्ब' (शर्ब) नामक कर (Tax) देना होता था, जो कुल ऊपज का 10% या 1/10 भाग देना होता था।
- फिरोज-शाह-तुगलक के दरबार में सर्वाधिक दास 1 लाख 80 हजार थे।
- इसने दासों की देखभाल के लिए एक अलग विभाग 'दीवान-ए-बंदगान' बनाया।
- इसने बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता भी दिया।
- गरीब, असहाय तथा अनाथ की सहायता के लिए इसने एक अलग विभाग दीवान-ए-खैरात बनवाया।
- इसने दर-ऊल-शफा नामक एक मुफ्त अस्पताल बनवाया।
- यह सरकारी खर्च पर हज की यात्रा करवाने वाले पहला भारतीय शासक था।
- विभिन्न धर्मों में आपसी समन्वय के लिए इसने एक अनुवाद विभाग बनवाया।
- फिरोज-शाह-तुगलक को सल्तनत काल का अकबर कहते हैं।
- फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला दुर्ग का निर्माण करवाया।
- इसी के समय प्रथम बार हिन्दु धर्म ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करना प्रारंभ किया गया था।
- इसी के द्वारा फुतूहात-ए-फिरोजशाही पुस्तक लिखा गया था।
- फिरोजशाह तुगलक के दरबार में बरनी नामक विद्वान रहता था। जिसने फतवा-ए-जहांदारी तथा तारीख-ए-फिरोजशाही नामक पुस्तक की रचना किया।
- इनकी मृत्यु 1388 ई. में हो गई।
- तुगलक काल में बिहार की राजधानी बिहार शरीफ थी।

➢ **सैन्य अभियान**

- फिरोजशाह ने 1359 ई. में उड़ीसा के जाजनगर पर चढ़ाई की और जगन्नाथ मंदिर को नष्ट कर काफी धन लूटा।
- 1365 ई. में उन्होंने काँगड़ा (हिमाचलप्रदेश) में स्थित नागरकोट के दुर्ग पर चढ़ाई की और वहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को नुकसान पहुचाया।
- इसमें सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया।

नसिरूद्दीन महमूद

- नसिरूद्दीन महमूद के समय तुगलक वंश का बिखराव बहुत तेजी से होने लगा।
- इसके बारे में कहा जाता है कि इसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक था।
- इनके पंजाब का सूबेदार खिज्र खां ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर लिया।
- तैमूर मध्य एशिया का एक खूंखार आक्रमणकारी था। 1369 ई. में अपने पिता के मृत्यु के बाद यह समरकंद का शासक बना था।
- 1398 ई. में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया।
- तैमूर लंग के भारत आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्ति था।
- तैमूर लंग के डर से यह दिल्ली छोड़ के भाग गया।
- तैमूर लंग ने खिज्र खां को दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया।
- तैमूर के आक्रमण से तुगलक वंश का अंत हो गया। इस प्रकार इस वंश का अंतिम शासक नसीरूद्दीन महमूद था।
- 1414 ई. में खिज्र खां ने इसकी हत्या कर दी।
- यह दिल्ली सल्तनत पर सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश था।

सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)

- सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्र खाँ थे।
- सैय्यद वंश स्वयं को इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद साहब का वंशज मानते थे।
- यह सल्तनत काल में शासन करने वाला एकमात्र शिया वंश था।
- खिज्र खाँ ने कभी भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि इसने स्वयं को रैय्यत-ए-आला कहा।
- खिज्र खाँ की मृत्यु 1421 ई. में हो गई।
- इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह था।
- 1451 ई. में बहलोल लोदी ने इसकी हत्या कर दी और लोदी वंश की स्थापना कर दी।

लोदी वंश (1451 ई.-1526 ई.)

- यह भारत का पहला शुद्ध अफगान वंश था।

बहलोल लोदी (1451 ई.-1489 ई.)

- तारीख-ए-दाउदी के लेखक अब्दुल्ला के अनुसार बहलोल लोदी अन्य सुल्तानों की तरह सिहासन पर नहीं बैठता था। यह अपने दरवारियों के सम्मान में खड़ा रहता था और उनके बैठने के बाद बैठता था।
- इसने एक सिक्का चलाया जिसे बहलोली सिक्का कहते हैं।
- बहलोली सिक्का अकबर के काल तक प्रचलन में था।

सिकंदर लोदी (1489 ई.-1517 ई.)

- अगला शासक सिकंदर लोदी बना। यह इस वंश का सबसे योग्य शासक था।
- इसने 1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की और इसे 1506 ई. में अपनी राजधानी बनायी।
- आगरा में ही सिकंदर लोदी ने एक किले का निर्माण करवाया जो बादलगढ़ के किले नाम से मशहूर था।
- इसने गुलरूखी नामक पत्रिका लिखी।
- इनके आज्ञा से आयुर्वेदिक ग्रंथों का **फरहंग-ए-सिकंदरी** नाम से फारसी अनुवाद करवाया गया था तथा इसके ही शासन काल में गायन संबंधित एक ग्रंथ **लज्जत-ए-सिकंदर शाही** की रचना हुई थी जो भारतीय संगीत पर पहला फारसी ग्रंथ था।

इब्राहिम लोदी (1517 ई.-1526 ई.)

- इस वंश का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था।
- इब्राहिम लोदी के संबंधी आलम खान एवं दौलत खान (पंजाब) ने इब्राहिम लोदी को मारने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोदी की हत्या कर दी और लोदी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना कर दी।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र शासक था जिसे युद्ध के मैदान में मार दिया गया।

सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग

नाम	संबंधित विभाग	बनाने वाला सुल्तान
दीवान-ए-मुस्तखराज	वित्त विभाग	अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही	कृषि विभाग	मुहम्मद बिन तुगलक
दीवान-ए-अर्ज	सैन्य विभाग	बलबन
दीवान-एवं-बंदगान	दास विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए- खैरात	दान विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दिवान-ए-ईशां	पत्र	
काजी	न्याय	
बरीद	गुप्तचर	
दस्तार बन्दान	उलेमा	

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR